Dr.pragya kumari
Asst.prof.
Dept.of psychology
H.D.Jain college Ara

Scanned with CamScanner

(ii) तहकीकाती प्रविधि (Probe technique)

इस प्रविधि द्वारा भी STM की अवधि पता लगाने की कोशिश की गयी है। इस प्रविधि में व्यक्ति को कुछ verbal items एक-दो सेकेण्ड्स तक दिखलाया जाता है और उसके बाद उसे Probe cue दिया जाता है। तहकीकाती संकेत के उपस्थित होने के ठीक बायें वाले इकाई का प्रयोज्य को बतलाना होता है। जैसे: प्रयोज्य को 2, 4, 6, 8, 9, 7, 5 अंक एक साथ एक-दो सेकेण्ड्स के लिए दिखाया गया और अब तहकीकाती संकेत के रूप में अंक 9 उपस्थित किया जाता है। ऐसी स्थिति में उसे अंक 7 का recall करना होगा। इस तरह से विभिन्न समय अंतरालों पर किसी भी इकाई का recall कराया जाता है। स्पष्ट है कि तहकीकाती संकेत के उपस्थित होने से पहले प्रयोज्य को दिखलाये गये संपूर्ण सामग्री को स्मृति में रखना पड़ता है। इस प्रविधि का उपयोग करके Waugh &

Norman 1962 ने एक प्रयोग किया। बाद में Peterson एवं उनके सहयोगियों ने भी तहकीकाती प्रविधि द्वारा STM का अध्ययन किया और लगभग उसी निष्कर्ष पर पहुँचा जो distractor technique के आधार पर था। अधिकतर प्रयोगों में यही देखा गया कि 20-25 सेकेंड्स की अवधि के बाद दिखलाये गये शाब्दिक इकाइयों के recall में काफी कमी आ जाती है।

इन दोनों Techniques में Distractor technique को अधिक योग्य माना गया है, क्योंकि Probe technique की वैधता की चुनौती कई बिन्दुओं पर मनोवैज्ञानिकों ने दिया है। इस विधि का सबसे बड़ा दोष यह है कि इसमें धारण अंतराल में सीखने की सामग्री दी जाती है तथा recall भी करवाया जाता है जिसका परिणाम यह होता है कि उससे recall किये जाने वाले इकाई की धारण शक्ति में बाधा पहुँचती है। इस तरह की बाधा बहुत कुछ retroactive inhibition के प्रयोगों

में उत्पन्न बाधा के समान होता है।

अतः मनोवैज्ञानिकों का मत है कि Probe technique द्वारा प्राप्त व्याख्या पार्श्विक द्वारा STM की- शुद्धता प्रतिबिम्बित नहीं होती है।

फलतः Probe technique के परिणाम पर- उतना भरोसा नहीं किया जा सकता है।

—